दीपावली पर करें सम्पति देने वाला गजलक्ष्मी अनुष्ठान

दूध सी धुली चांदनी-सा सफेद रंग, पांच सिर, दस आँखें, दो पैर, सुन्दर-मनमोहक देवी महालक्ष्मी का प्रिय, नाम- ऐरावत हाथी। महालक्ष्मी के इस प्रिय ऐरावत हाथी को 'गज लक्ष्मी' कहा गया। जब भी महालक्ष्मी का स्मरण किया जाता है तो वह कमल पर विराजमान दिखती है, साथ ही इनके दोनों ओर दो सफेद रंग के हाथी अपनी सूंडों में स्वर्ण कलश दबाए, उसमें भरे जल बरसाते नजर आते हैं। क्या ऐरावत हाथी समुद्र मंथन से ही प्राप्त हुआ या कहीं अन्य जगह से? क्या महालक्ष्मी के दोनों ओर खड़े हाथी सफेद रंग के ही हैं? इनमें एक हथिनी नहीं है? अगर समुद्र मंथन से ऐरावत हाथी प्राप्त हुआ तो उसकी संगिनी बनी सफेद हथिनी कहां से आई? क्या यह सच है कि दीपावली पर सफेद हाथी की पूजा की जाएं, उसे भरपेट भोजन से तृप्त किया जाए, समझिये कि 'गजलक्ष्मी' का रुप आपके लिए धन-धान्य, सम्पदा, वैभव, सुख के दरवाजे खोल देगा? कुछ ही समय में आप 'श्रीमान्' से 'श्रीमंत' हो जाएंगे? ऐसे प्रश्नों का उत्तर, ऐसी जिज्ञासाओं का समाधान करता यह आलेख-

हाथी देखने की उत्सुकता किसमें नहीं होती, हाथी किसने नहीं देखा, उसे देख कर बच्चे कितने खुश होते है, यह सभी जानते है, पर जिन हाथियों को आपने देखा, बच्चों ने देखा वह श्याम तथा कुछ भूरे रंग के ही होंगे। सफेद रंग के नहीं होंगे, क्योंकि 'सफेद हाथी' के दर्शन अब लगभग संभव नहीं है।

सृष्टि के जीवन जगत में भारी भरकम वजन, भव्य आकृति में समुद्र की 'व्हेल मछली' के बाद हाथी की ही गणना होती है। 'व्हेल मछली' घातक अनुपयोगी है पर हाथी का भारतीय धर्म तथा जनजीवन में अनादि काल से सम्बन्ध है। भौतिक युग में भी इसकी पूजा होती है। इसे शुभ माना गया है। भारतीय साहित्य के साथ-साथ लोक कथाओं में कई हाथियों के कई रोचक-रोमांचक प्रसंग सुने जा सकते हैं। अगर इन्हीं जरी-गोटेदार रंगों के वस्त्रों, चमकते आभूषणों से सजाया जाए, चारों पैरों में झालरदार पायल बंदी हो तो कहना ही क्या, तब इनकी मनभावन छवि आँखों में उतर जाती है। दक्षिण भारत में मंदिरों की आरती, धार्मिक अनुष्ठानों के लिए सजे-संवरे, वस्त्राभूषणों से अलंकृत हाथियों का होना अनिवार्य है। जयपुर में 'गणगोर' उत्सव में सजे-धजे हाथियों को देखने, गणगोर का दर्शन करने विदेशी सैलानी के अलावा लाखों लोग उमड़ते है। यों उत्तर भारत सहित लगभग सभी जगहों के सामाजिक, धार्मिक पर्वों में हाथियों का उपयोग होता है। परम्परागत रुप में गणतंत्र दिवस पर बहादुर बच्चों को हाथियों पर होदे में बिठाकर झांकिया निकाली जाती है।

हाथियों की सवारी को राजशाही सवारी माना गया। सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी तक हाथी का राजा-महाराजाओं के वाहन के रुप में, युद्ध में उपयोग होता रहा। तब किसी भी राज्य की सम्पन्नता, शक्ति का अनुमान वहां की सेना में हाथियों की संख्या से लगाया जाता था। भारतीय जनजीवन, पर्वो-त्यौंहारों में आज भी हाथी महत्वपूर्ण है।

वैसे जंगल का राजा 'शेर' क्यों न कहलाता हो, 'बाघ' भी अपना वजूद क्यों न रखता हो, पर हाथी इनसे भयभीत नहीं होता। हथिनी के पहरे में होते उसके बच्चों को 'शेर' या 'बाघ' अथवा अन्य घातक जीव अपना शिकार नहीं कर सकते। हाथी का मित्र तथा शत्रु है तो मनुष्य। इसके अमूल्य दांत के लिए हाथियों के अवैध शिकार की घटनाएं इतनी बढ़ रही है कि यह विशालकाय भारी-भरकम जीव गुप्त भी हो सकता है। कहां से आया हाथी? इसका जन्म कैसे हुआ, यह जानने के लिए हम इससे जुड़ी पौराणिक प्रसंग को समझते है।

जब समुद्र मंथन के समय समुद्र से चौदह रत्न निकले उनमें पांच सिर वाला सफेद रंग का ऐरावत हाथी भी था। ये देखने में इतना दिव्य, आभापूर्ण, मनमोहक, सुन्दर था कि देवराज इन्द्र ने अपने लिए मांग लिया। देवराज इन्द्र ऐरावत के देवत्व विशेषता को नहीं पहचान पाये। क्योंकि इसके पांचों सिर पंच देवों के प्रतीक थे। दिव्य दृष्टि द्वारा इनमें सूर्य, शिव, विष्णु, गणेश तथा आदि शक्ति भगवती दुर्गा की छवि देखी जा सकती थी। समुद्र मंथन से ही प्रकट हुई महालक्ष्मी ने इसे तुरन्त पहचान लिया तो उन्होंने इसे अपने पास रख लिया। ऐरावत हाथी के जन्म का ही एक दूसरा प्रसंग है। यह ब्रह्मा के दाहिने हाथ से प्रकट हुआ तो साथ ही साथ सात अन्य हाथी भी प्रकट हो गये। फिर ब्रह्मा की बायीं हथेली से आठ हथनियां प्रकट हुई। ब्रह्मा ने हाथी-हथनियों के इन आठ जोड़ों को आठों दिशाओं के प्रहरी रहने की जिम्मेदारी सौंप दी। इनके द्वारा ही हाथियों का वंश प्रारम्भ हुआ माना जाता है। ये आठों हाथी, आठों हथनियां इतनी बलशाली थीं कि असुर तक इनसे टकराने में हिचकते, भय खाते थे। कालान्तर में इनके वंश में सफेद रंग बदलता गया। कलियुग के दुष्प्रभाव से इनका रंग श्याम-भूरा होता गया। शक्ति का प्रभाव भी वैसा नहीं रहा। ये तब भी शुभ थे, आज भी शुभ हैं। इनमें अशुभता कुछ भी नहीं है। प्राचीन महलों, हवेलियों के मुख्य दरवाजों के दोनों ओर इनके भव्य चित्र तथा कलात्मक प्रतिरुप में देखे जा सकते हैं। महालक्ष्मी प्रिय पंचमुखी ऐरावत हाथी के वंश होने का कहीं उल्लेख नहीं है। यह अजर-अमर है। इसमें असंख्य गुण हैं। इसकी प्रतिमूर्ति की पूजा-अर्चना अत्यन्त लाभकारी बताई गई है क्योंकि ऐरावत में पांच देवों के साथ महाशक्ति स्वयं मौजूद है, इसीलिए महालक्ष्मी स्वयं इसमें 'गजलक्ष्मी' के रुप में स्थित हुई है। यहीं नहीं देवाधिदेव शिव तक ने गणेश के कटे सिर की जगह सफेद हाथी का ही सिर लगाना उपयुक्त समझा। इससे हाथी की गुणवत्ता देवतुल्य महत्त्वत्ता सिद्ध हो जाती है। हम गजराज के एक उस

पौराणिक प्रसंग को कैसे भूलें कि जब अथाह में मगरमच्छ द्वारा हाथी के पिछले पैर को अपने मुंह में पकड़ लिया तो उसने भगवान विष्णु से इस संकट से मुक्त करने की प्रार्थना की तब भगवान विष्णु तुरन्त वहां प्रकट हुए। उन्होंने अपने सुदर्शन चक्र से मगरमच्छ की गर्दन काट दी थी। हाथी पूज्य हैं, शुभ है, मांगलिक है, इतना विशालकाय यह प्राणी शुद्ध शाकाहारी है। सफेद रंग के हाथी तो अब दुर्लभ तथा अमूल्य है। ऐरावत हाथी की प्रति-आकृति मूर्ति की पूजा मनोकामनाएँ पूर्ण कर सकती है। इसकी जगह भले ही श्याम रंग के हाथी क्यों न हो, इनकी सुरक्षा करना हम सबका दायित्व है। जब यह हमारा शत्रु नहीं, मित्र है तो इसका अपने स्वार्थ के लिए शिकार कर कितना अनर्थ, कितना अधर्म, कितना पाप कर रहे हैं। ऐसे अधर्मित तथा दुष्कृत्य से 'गजलक्ष्मी' 'महालक्ष्मी' कैसे प्रसन्न हो सकती हैं?

गजलक्ष्मी अनुष्ठान विधि-

गजलक्ष्मी का रुप अष्टलक्ष्मियों में से एक है। गजलक्ष्मी से तात्पर्य माँ कमल के उस स्वरुप से है, जिसमें दो विशालकाय गज अमृतकलशों से उन पर जल वर्षा कर रहे हैं और माँ लक्ष्मी अपने भक्तों को आशीर्वाद मुद्रा में धन प्रदान कर रही हैं। इस अनुष्ठान को करने से आप समस्याओं से उबरेंगे और आपकी मनचाही इच्छा पूर्ण हो जाएगी।

गजलक्ष्मी के अनुष्ठान में मंत्र के सवा लाख जप करने होते हैं और जप के पश्चात् दशांश तुल्य हवन, तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोज करवाना होता है। यह अनुष्ठान आप स्वयं कर सकते हैं अथवा पण्डितों से भी करवा सकते हैं। गजलक्ष्मी के मंत्र की एक माला जप में लगभग ५ से ७ मिनट का समय लगता है। यह अनुष्ठान दीपावली से प्रारम्भ करते हुए नौ दिन अथवा २१ दिन में पूर्ण किया जा सकता है। अन्तिम दिन दशांश हवन, तर्पण इत्यादि कार्य करने होते हैं। नौ दिन में इस अनुष्ठान को पूरा करने के लिए नित्य डेढ़ सौ माला करनी होती है, जो कुछ अधिक हो जाता है, अतः आप स्वयं यह अनुष्ठान करें, तो २१ दिनों के लिए करें, जिसमें नित्य ६० माला करनी होती है। इसके लिए दीपावली के दिन भी गजलक्ष्मी का पूजन करने के पश्चात् कमलगट्टे की माला से ६० मालाओं का जप करना चाहिए।

चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर रोली या सिन्दूर से रंगे हुए अक्षतों से अष्टदल कमल बनाना चाहिए। इस पर श्रीयंत्र एवं महालक्ष्मी की प्रतिमा अथवा चित्र की स्थापना करनी चाहिए। नैवेद्य रुप में केसर मिश्रित खीर चढ़ानी चाहिए।

अनुष्ठान के अन्तिम दिन दशांश मंत्रों का हवन करने के पश्चात् ब्राह्मण और नौ कन्याओं को भोजन कराएँ। इस अनुष्ठान में मंत्र जप करने से पूर्व माँ लक्ष्मी के निम्नलिखित स्वरुप का ध्यान अवश्य करें।

कान्त्या कांचन सन्निभा हिमगिरि प्रख्यैः चतुर्भिर्गजैः।
हस्तोप्रस्थिहिरण्मयामृतघटैरासिंच्च-माना श्रियम्।
विभ्राणा वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्चलां।
क्षौमाबद्ध नितम्बबिम्ब ललितां वन्देऽरविन्दस्थिताम्।।

ध्यान के पश्चात् माँ लक्ष्मी के गजलक्ष्मी रुप के मंत्र का जप करें।

मंत्र- ऊँ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।।

इसके बाद निम्नलिखित से माँ के गजलक्ष्मी स्वरुप से प्रार्थना करें-

जयजय दुर्गतिनाशिनि कामिनि सर्वफलप्रद शास्त्रमये।
रथगज तुरगपदादि समावृत परिजनमण्डित लोकनुते।।
हरिहर ब्रह्म सुपूजित सेवित तापनिवारिणि पादयुते।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि गजलक्ष्मि सदा पालय माम्।।

अन्त में क्षमाप्रार्थना करें-

आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम्।
पूजा कर्म न जानामि, क्षमस्व परमेश्वरि।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं, भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
मया यत्-पूजितं देवि! परिपूर्णं तदस्तु मे।। □□□

पूजा सुपारी के 10 ऐसे उपाय, जो बदल देंगे आपके मुसीबत के दिन

जब सुपारी की विधिवत पूजा की जाती है तो वह चमत्कारी हो जाती है। अगर आप इस चमत्कारी सुपारी को हमेशा अपने पास रखते हैं तो जीवन में कभी भी पैसों की तंगी नहीं रहती है। ये हैं सुपारी के 10 सटीक उपाय...

1. पूजा की सुपारी पर जनेऊ चढ़ाकर जब पूजा जाता है तो यह अखंडित सुपारी गौरी गणेश का रुप बन जाती है। इस सुपारी को तिजोरी में रखने पर घर में लक्ष्मी स्थायी रूप से निवास करने लगती हैं और इससे सौभाग्य आने लगता है।

पूजा में इस्तेमाल की गई सुपारी को तिजोरी में रखना भी लाभदायक होता है। सुपारी को धागे में लपेटें और अक्षत, कुमकुम लगाकर पूजा जरुर कर लें। पूजा करके तिजोरी में रखी गई सुपारी बहुत लाभदायक होती है।

3. व्यापार में तरक्की के लिए भी सुपारी बहुत सहायक होती है। माना जाता है कि शनिवार की रात पीपल के पेड़ की पूजा करके सुपारी और उसके साथ एक रुपये का सिक्का रखें। अगले दिन उस पेड़ का पत्ता तोड़कर लाएँ उस पर सुपारी रखें और इसे अपनी तिजोरी में रखें इससे व्यापार में बढ़ोत्तरी होती है।

4. पान का पत्ता रखें उस पर सिन्दूर में घी मिलाकर स्वस्तिक बनाएँ और उस पत्ते पर कलावे में लपेटी हुई सुपारी रख कर पूजा करनी चाहिए। यह उपाय घर में सफलता के लिए द्वार खोलता है।

5. अगर आपका कोई काम बनते बनते रह जाता है या आपको किसी कार्य में लगातार असफलता मिल रही है तो जब भी उस कार्य को करने जाए तो एक लौंग और सुपारी अपने पास रख लिया करें। काम के समय लौंग को अपने मुंह में रख लें और उसे चूसें। सुपारी घर आने के बाद वापस गणेशजी के फोटो के सामने रख दें। इससे रुका हुआ काम यकीनन पूरा होगा।

6. सुपारी को चाँदी की डिबिया में अबीर लगाकर किसी भी पूर्णिमा के दिन पूजा घर में रखें तो घर में मंगल कार्य जल्दी होते हैं।

7. हल्दी, कुंकुम और चावल लगाकर सुपारी पर मौली लपेटें और इसे किसी भी गुरुवार को विष्णु-लक्ष्मी मंदिर में छुपाकर आ जाएँ। इससे अविवाहित कन्या की शादी के योग बनते हैं।

8. अगर घर में कोई भी मांगलिक कार्य हो तो उसके निर्विघ्न संपन्न होने के लिए सुपारी को बोलकर लाल कपड़े में बांधकर छुपा दें। जब कार्य अच्छे से संपन्न हो जाए तो यह सुपारी किसी गणेश मंदिर में जाकर रख दें।

9. घर से जब कोई तीर्थ यात्रा पर जाएं तो उसके सकुशल वापिस आने तक तुलसी के गमले में सुपारी गाड़ दें। आने पर उसे धोकर किसी भी मंदिर में चढ़ा दें।

10. सुपारी को 7 बार अपने पर से उतार कर हवन कुंड में डालने से हर तरह की अला-बला दूर होती है। □□□